B.A. History Hon's, Part-I

Paper: I, Unit-IV, Date - 06.07.2020

Lession: ऋग्वैदिक अथवा पूर्व वैदिक आर्यों के आर्थिक एवं धार्मिक जीवन

आर्यों की अनार्यों के साथ निरंतर संघर्षरत रहने के कारण उन्हें स्थायी जीवन व्यतीत करने में काफी कठिनाई हुई। यही कारण है कि आर्थिक क्षेत्र में वे कोई विशेष प्रगति नहीं कर सके। सैन्धवों की तुलना में उनका वाणिज्य एवं व्यवसाय तथा उद्योग-धन्धों की बहुत कम प्रगति हुई।

अन्तिम संस्कार: पूर्व वैदिक काल के आर्य लाशों को जमीन के अन्दर दफना देते थे या पूर्णरूपेण जला ही देते थे। किन्तु विधवाओं की लाश जलाने की प्रथा नहीं थी।

पशुपालन: प्रारम्भिक आर्यों के जीविकोपार्जन का मूलाधार पशुपालन था। उनके पालतू पशुओं में गाय, बैल, घोड़े, कुत्ते, गधे, बकरे भेड़ आदि की प्रधानता थी। उनके जीवन में गाय का सर्वाधिक महत्व था। गाय ही विनिमय का मुख्य साधन थी। ऋग्वेद के अनुसार एक इन्द्र की मूर्ति 10 गायों में मिलती थी।

कृषि: प्रारम्भ में पशुपालन की तुलना में कृषि-कार्य बहुत कम होता था, किन्तु कालान्तर में आर्यों ने स्थायी रूप से बसना शुरू किया और कृषि-कार्य बड़े पैमाने पर शुरू किया गया। लोग मुख्यतः गेहूँ, जौ, धान, तिल एवं शाक-सब्जी की खेती करते थे। खेती के लिए हल का प्रयोग किया जाता था जिसमें एक साथ 6 से 12 बैलों को जोतने का उल्लेख प्राप्त मिलता है। उत्तम खेती के लिए आर्य खाद एवं सिंचाई का भी प्रयोग जानते थे।

आखेट: जानवरों का शिकार कर अपना जीविका चलाना भी आर्यों के आर्थिक जीवन की एक विशेषता थी। सुअर, भैंसे, शेर एवं मुर्गों का शिकार कर वे उसका मांस भक्षण करते थे। ऋग्वेद में हम धनुष-बाण, जाल-फंदा आदि की चर्चा मिलता है जो उनके शिकार के प्रमुख औजार थे।

व्यापार: ऋग्वैदिक आर्यों ने व्यापार के क्षेत्र में कोई विशेष प्रगति नहीं की थी। उनके व्यापार का दायरा बहुत सीमित था। सम्भवतः बड़े-बड़े भूपति ही व्यापार कार्यों में लगे हुए थे। वे अधिकतर घरेलू व्यापार ही करते थे। वे मुख्यतः चद्दरे एवं चमड़े का व्यापार करते थे। ऋग्वेद में इन्द्र की एक मूर्ति का मूल्य दस गाय आंका गया है। सम्भवतः मुद्रा का प्रचलन सभ्यता के अन्तिम चरण में हुआ होगा क्योंकि निष्क नामक एक स्थान पर 100 घोड़ा का मूल्य 100 निष्क बताया गया है। व्यापारी वर्ग 'पणि' एवं पणि के नाम से जाने जाते थे।

गृह उद्योग एवं दस्तकारी: पूर्व वैदिक आर्यों ने विभिन्न उद्योग-धन्धे एवं दस्तकारी के क्षेत्र में प्रगति कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने की चेष्टा की थी। लोहा, सोना, चाँदी, ताँबा, टीन, शीशा आदि धातुओं से यहाँ के कारीगर विभिन्न वस्तुओं के निर्माण में निपुणता प्राप्त किये हुए थे। लोहार की लोहे, ताँबे, पीतल आदि से तरह-तरह के बरतन एवं अस्त्र-शस्त्र को बनाने में कुशलता प्राप्त थी। सुनार सोने एवं चाँदी के आभूषणों के निर्माण में निपुण थे। यहाँ के लोग कटाई, बुनाई, रंगाई और सिलाई के कार्य में भी दक्ष थे।

धार्मिक जीवन (Religious Life)

पूर्व वैदिक आर्यों का धार्मिक जीवन मुख्यतः

सरल एवं आडम्बरहीन था। वे स्तुति, प्रार्थना और यज्ञादि के द्वारा अपने देवी-देवताओं की उपासना कर मनोवांछित फल-प्राप्ति की कामना किया करते थे। उनके धार्मिक जीवन की विस्तृत झांकी हमें ऋग्वेद में प्राप्त होती है।

प्रकृति पूजन: ऋग्वैदिक आर्य प्रकृति के महान उपासक थे। वे प्रकृति-प्रदत्त उन सभी वस्तुओं में देवता का वास मानते थे जिनसे उन्हें जीवन में किसी-न-किसी रूप में लाभ पहुँचता था। सूर्य, वायु, चन्द्र, अग्नि, वरुण, रुद्र, ओस आदि प्राकृतिक शक्तियाँ उनके जीवन में स्तुत्य थे।

देवता: आर्यों के पूजक होने के कारण यद्यपि उनके असंख्य देवी देवताएँ थीं, किन्तु उनसे कुल 34 देवताओं की प्रधानता थी। वे देवता 12-12 के तीन वर्गों में विभाजित थे - पार्थिव, अन्तरिक्ष तथा स्वर्ग देवता। प्रथम वर्ग में पृथ्वी अग्नि, सोम, बृहस्पति, आदि आते थे। इनमें से सर्वश्रेष्ठ देवता अग्नि थे। दूसरे वर्ग के देवताओं में इन्द्र, रुद्र, मरुत, वायु आदि प्रमुख थे। इस काल का सर्वश्रेष्ठ देवता इन्द्र माना जाता था। देवताओं के तीसरे वर्ग में वरुण, उषा, सूर्य, मित्र, अश्विनी आदि प्रमुख थे। उनमें से सूर्य को वे आकाश का सर्वश्रेष्ठ देवता मानते थे। रुद्र उनके जीवन में कई दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण था। वरुण को वे जल का स्वामी मानकर पूजते थे। पूषण को आर्य लोग मार्ग, चरवाहों एवं भूले-भटके पशुओं का स्वामी मानकर पूजते थे। सोम का भी उनके जीवन में महत्वपूर्ण स्थान था।

एकेश्वरवाद की कल्पना: यद्यपि आर्य बहुदेववादी थे फिर भी उनमें एकेश्वरवाद की कल्पना थी। वस्तुत: वे एक ही ब्रह्म के उपासक थे। वे समस्त देवताओं को आदिब्रह्म का ही अंश मानते थे। सम्भवत: आपसी संघर्ष के कारण भी लोगों में एकेश्वरवाद की कल्पना हुई हो। अधिकांश विद्वानों के मतानुसार इस काल में पूजा का प्रचलन नहीं था। मंदिरों में भी प्रमाण नहीं मिलते हैं।

धार्मिक विश्वास: पूर्व वैदिक आर्यों का धार्मिक विश्वास था कि देवता ही इस सृष्टि की स्रष्टा हैं और संहारक भी एकमात्र वे ही सकते हैं। अत: देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ तथा बलि जैसे कई धार्मिक अनुष्ठान करते थे। प्रार्थना के रूप में लोग दिन में तीन बार गायत्री मंत्रोच्चारण करते थे। पितर पूजा का भी प्रचलन था। साथ ही इस काल के लोग भूत-प्रेत, जादू-टोना आदि जैसे अन्धविश्वासों से भी ग्रस्त थे। उनसे भयमुक्त होने के लिए वे तंत्र-मंत्र का सहारा लेते थे। उन्हें स्वर्ग-नरक की भी अनुभूति थी।

पूर्व वैदिक कालीन आर्यों की सभ्यता एवं संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर दृष्टिपात करने से यह निष्कर्ष सहज ही निकाला जा सकता है कि उच्च कोटि की सभ्यता के लिए जिन मूलभूत तत्वों की आवश्यकता होती है, वे सभी तत्व यहाँ विद्यमान थे। यह पूर्णत: एक ग्राम्य सभ्यता थी।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर